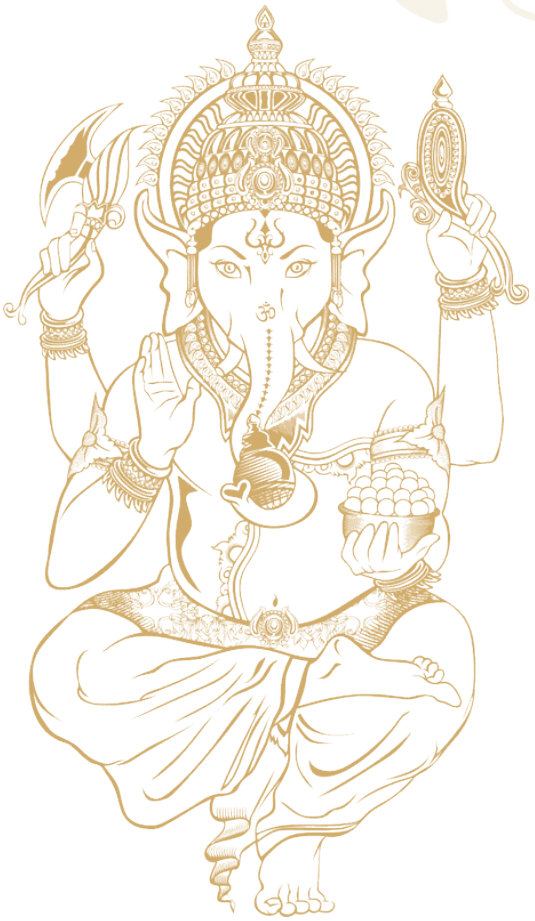

Chganlal Mohini

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119917902

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
26/06/2006	जन्म तिथि	12/05/2011
सोमवार	दिन	गुरुवार
घंटे 10:40:00	जन्म समय	09:58:00 घंटे
घटी 12:15:00	जन्म समय(घटी)	10:19:32 घटी
India	देश	India
Dhar	स्थान	Dhar
22:32:00 उत्तर	अक्षांश	22:32:00 उत्तर
75:24:00 पूर्व	रेखांश	75:24:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:28:24	स्थानिक संस्कार	-00:28:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:46:00	सूर्योदय	05:50:11
19:16:17	सूर्यास्त	18:59:41
23:56:52	चित्रपक्षीय अयनांश	24:01:13

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
राहु 3वर्ष 11मा 16दि	14:58:47	सिंह	लग्न	मिथु	25:58:23	शुक्र 18वर्ष 2मा 3दि
गुरु	10:32:07	मिथु	सूर्य	मेष	27:06:37	शुक्र
12/06/2010	17:03:54	मिथु	चंद्र	सिंह	14:32:55	12/05/2011
12/06/2026	19:40:17	कर्क	मंगल	मेष	06:39:04	15/07/2029
गुरु 30/07/2012	04:37:55	कर्क	बुध	मेष	01:12:47	शुक्र 14/11/2012
शनि 11/02/2015	15:11:05	तुला व	गुरु	मेष	00:52:42	सूर्य 14/11/2013
बुध 19/05/2017	08:39:30	वृष	शुक्र	मेष	01:26:35	चन्द्र 16/07/2015
केतु 24/04/2018	15:41:26	कर्क	शनि व	कन्या	17:15:18	मंगल 14/09/2016
शुक्र 23/12/2020	05:20:40	मीन व	राहु व	वृश्चि	29:51:36	राहु 14/09/2019
सूर्य 12/10/2021	05:20:40	कन्या व	केतु व	वृष	29:51:36	गुरु 15/05/2022
चन्द्र 11/02/2023	20:45:45	कुंभ व	हर्ष	मीन	09:12:56	शनि 15/07/2025
मंगल 18/01/2024	25:33:39	मक व	नेप	कुंभ	06:46:28	बुध 15/05/2028
राहु 12/06/2026	01:13:47	धनु व	प्लूटो व	धनु	13:13:15	केतु 15/07/2029

लग्न-चलित

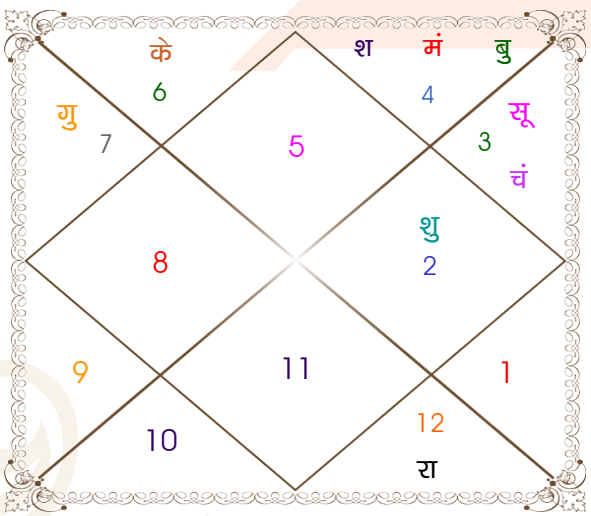

लग्न-चलित

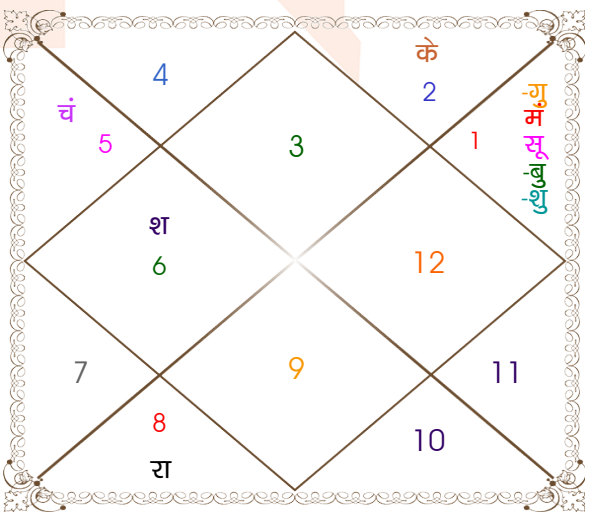

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	श्वान	मूषक	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	सूर्य	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.50		

बेहंदसंस का वर्ग सिंह है तथा डवीपदप का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार बेहंदसंस और डवीपदप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

बेहंदसंस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल बेहंदसंस कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल बेहंदसंस कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डवीपदप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डवीपदप कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

बेहंदसंस तथा डवीपदप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।